



वेश्या तो पूज्या होनी चाहिए

“ जी नहीं ! मुझे यह कहने में जरा भी शर्म नहीं है कि मैं एक वेश्या यानि सेक्स वर्कर हूँ ! मेरे कई नाम हो सकते हैं- वेश्या, कालगर्ल, एस्कोर्ट, धन्धेवाली, कोटे वाली, रण्डी, सेक्स वर्कर, प्रोस्टीच्यूट Callgirl, Prostitute, Sex Worker, Escort मुझे मालूम है आप मेरे काम को एक गाली की तरह इस्तेमाल करते [...]

”

...

Story By: (fulwa)

Posted: Sunday, March 25th, 2012

Categories: रंडी की चुदाई / जिगोलो

Online version: वेश्या तो पूज्या होनी चाहिए

वेश्या तो पूज्या होनी चाहिए

जी नहीं ! मुझे यह कहने में जरा भी शर्म नहीं है कि मैं एक वेश्या यानि सेक्स वर्कर हूँ ! मेरे कई नाम हो सकते हैं- वेश्या, कालगर्ल, एस्कोर्ट, धन्धेवाली, कोठे वाली, रण्डी, सेक्स वर्कर, प्रोस्टीच्यूट Callgirl, Prostitute, Sex Worker, Escort

मुझे मालूम है आप मेरे काम को एक गाली की तरह इस्तेमाल करते हैं लेकिन आपको एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि जिनके घर फूस के हों उन्हें दूसरों के घर पर जलती तीलियाँ नहीं फेंकनी चाहिए। मैंने शताब्दियों से कोई जवाब नहीं दिया तो सिर्फ इसलिए कि मुझे आपके कुछ भी कहने से फर्क नहीं पड़ता लेकिन अब मुझे लगता है कि आपको भी आइना दिखा ही दिया ही जाए।

एक बात बताइए, अगर मैं इतनी ही बुरी हूँ और मेरा काम इतना ही बुरा है तो फिर मेरा कारोबार इतना जबरदस्त कैसे चल रहा है ? क्या हमारे पास मंगल ग्रह से एलियन आते हैं या वे आते हैं जो दिन-भर चरित्र और सभ्यता के मुखौटे लगाए घूमते हैं और शाम ढलते-ढलते हमारे आस-पास चक्कर काटने लगते हैं ?

पहले हमारी दुकानें सिर्फ एक जगह होती थीं लेकिन अब हमारी दुकानें कॉलोनियों के अंदर, धर्मस्थलों के आस-पास, कॉलेजों के पीछे और मॉलों-शॉपिंग आर्केड के आस भी खूब फल-फूल रही हैं। भगवान सलामत रखें इन ढोंगियों को, जो दिन भर हमें हिंकारत से देखते हैं और शाम को हमारी रोजी-रोटी का बंदोबस्त करते हैं।

जब आपकी पूरी व्यवस्था ही खरीदने-बेचने को लेकर चल रही है तो मेरे काम को लेकर ही इतना हो-हल्ला क्यों है ? बाजार सिर्फ चौराहों और रास्तों पर नहीं रह गया है, वह हमारे घरों में घुस गया है। इंसानियत, ईमानदारी, सच्चाई, क्या नहीं बिक रहा यहाँ ? जरा

बताइए कि आपके यहाँ सरकारी नौकरियों के कोठे नहीं सजते हैं क्या ?

शब्दों की दलाली करके कितने छुटभइये महान साहित्यकार का दर्जा पा गए और डिग्रियों का सौदा करके कितने अनपढ़ शिक्षाविद् बन गए। क्या आपकी राजनीति धनकुबेरों का बिस्तर नहीं गर्म नहीं कर रही और क्या जनता पर शासन करने वाले ये राजे-रजवाड़े जिन्हें आप नौकरशाह कहते हो नोट की गड्डियाँ देखते ही नंगे नहीं हो जाते हैं ?

मुझे पता है कि सबको बड़ा नाज है इस विवाह संस्था पर। लेकिन दहेज में कार, फ्लैट देखते ही लार टपकाने वाले आपके युवा में एक जिगोलो जितना आत्मसम्मान भी है क्या ? क्या अधिकांश युवतियाँ कोई और करियर ऑप्शन न होने के कारण विवाह की नौकरी नहीं करतीं, जहाँ वे अपनी देह से दिन में चूल्हा तपाती हैं और रात में बिस्तर ?

सुना है कानपुर और आगरा में चमड़े का बहुत बड़ा कारोबार है। लेकिन उससे भी कई गुना बड़ा चमड़े का कारोबार तो मुम्बई में होता है जिसे आप फिल्म इंडस्ट्री कहते हो। मेकअप की परतों, फोटोशॉप के चमत्कारों, बोटॉक्स, सिलिकॉन और स्टेरॉयड की मेहरबानी से चलते इस उद्योग में अभिनय बिकता है या हड्डियों पर टिकी ये एपीथिलीयल टिश्यू की परतें, ये आप अपने आप से पूछिए।

फैशन की भी क्या कहूँ ! शरीर की रक्षा के लिए बने कपड़ों को लाज-शर्म की अश्लील भावनाओं से जोड़ कर आपने जो गुल खिलाए हैं उसकी तो पूछो ही मत। हद है कि लाखों-करोड़ों का कारोबार सिर्फ इसलिए चल रहा है कि कपड़े पहन कर नंगई किस तरह दिखाई जाए !!

धर्म की बात तो बस रहने ही दो, ईश्वर और धर्म की दलाली करने वालों के सामने तो हमारे यहाँ के दल्ले भी पानी मांग जाएँ। दया आ जाए तो हम तो शायद ग्राहक पर पचास रुपये छोड़ दें लेकिन आपके दक्षिणाजीवी तो दस रुपये के लिए जमीन पर लोट जाएँगे और

आपकी सात पुश्र्तों की मां-बहन एक कर देंगे। राजनैतिक दलों के गोद में बैठते आपके धर्मगुरुओं को देख कर सच मुझे भी शर्म आने लगती है। आप लोगों की समझ का भी लोहा मानना पड़ेगा कि चंद पैसे लेकर लाशों को फूंकने वाले महामना को तो आप अच्छूत कहते हो लेकिन कंगाल को भी चूस लेने वाले आपके बाबा, गुरु, ज्योतिषी की चरणवंदना करते हो।

साम्प्रदायिकता का बड़ा हल्ला है आजकल लेकिन मैं जानती हूँ कि हमसे ज्यादा धर्मनिरपेक्ष, पंथनिरपेक्ष और वादनिरपेक्ष कोई नहीं है। कोई भी हमारे पास आता है हम उसे अपनी सेवाएँ बिना किसी भेदभाव के देती हैं। मजेदार बात तो यह है कि एक बार कपड़े उतर जाएँ तो हर सम्प्रदाय के मर्द सब एक सा ही व्यवहार करते हैं।

आपको तो पूजाघर बनवा कर हमारी पूजा करनी चाहिए, सोचो जब हम हैं तब तो दैहिक शोषण की घटनाओं का यह हाल है, अगर हमने अपनी दुकानें बंद कर ली तो तुम्हारी बहू-बेटियाँ कभी घर से बाहर भी नहीं निकल पाएँगी।

सम्बंधित लेख : [क्या वो किसी नाम का हकदार नहीं!](#)

Other stories you may be interested in

तीन चूतों की गैंग बैंग चुदाई-2

तभी प्रियंका मुझे काफ़ी का कप पकड़ाती हुई सीमा की साईड लेती हुई बोली- अरे, ठीक ही तो कह रही है वो! ये काम तो आप मर्दों का है. हमारा काम तो बस टांगें उठा कर आपके सामने लेटना है. [...]

[Full Story >>>](#)

सुन्दर जवान लड़की की कुंवारी चूत-3

दोस्तो, अभी तक आपने मेरे और रूपा के बारे में जाना कि किस प्रकार से मैं रूपा को अपने प्लान में फंसा लिया। जितना मुश्किल मैं समझ रहा था ये काम उतनी ही आसानी से हो गया था। रूपा अब [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी बहन और जीजू की अदला-बदली की फैटेसी-17

अब तक की मेरी इस मस्त सेक्स कहानी में आपने पढ़ा था कि हम सभी माले से दो दिन के लिए घूमने निकल गए थे. फेरी के एक केबिन में मैं अपनी बहन चित्र को अपना लंड चुसवा रहा था [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की गर्लफ्रेंड की चुत चुदाई

दोस्तो, मैं अजमेर से राज फिर आपके सामने अपनी सेक्स कहानी को लेकर हाज़िर हूँ. पिछली सेक्स कहानी पड़ोसन लड़की होली खेलने आई और चुत चुदवा गई के लिए आपके कमेंट मिले, उसके लिए आपको धन्यवाद. दोस्तो, सोमी के चले [...]

[Full Story >>>](#)

जिगोलो बनकर टीचर का नया साल मनवाया

नमस्कार दोस्तो, मैं किंग एक बार फिर से आपके सामने हाज़िर हूँ अपनी नई प्रस्तुति के साथ। सबसे पहले मेरी पिछली सभी कहानियों को इतना प्यार देने के लिए मैं आप सब का दिल से आभारी हूँ। मेरी पिछली कहानी [...]

[Full Story >>>](#)

